डिजिटल दैनिक
साहित्य 24
www.sahitya24.com
राष्ट्रीय संस्करण
साहित्य कला और संस्कृति को समर्पित एक डिजिटल अभियान
वर्ष-05, अंक-30 | पृष्ठ-4 | डिजिटल अंक-30 | बुधवार, 09 सितंबर, 2026 | संपादक हरिप्रकाश पाण्डेय | मूल्य 0, निःशुल्क

हिन्दी पखवाड़ा के अंतर्गत पर्पल पेन संस्था ने 'शब्द-स्पंदन' काव्य गोष्ठी आयोजित की

नई दिल्ली: हिन्दी पखवाड़े के अंतर्गत 'पर्पल पेन' साहित्यिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्था द्वारा 'शब्द स्पंदन' काव्य गोष्ठी आईटीओ स्थित अणुव्रत भवन में रविवार, 06 सितम्बर को आयोजित की गयी। दिल्ली/एनसीआर से पधारे कविगण ने भावपूर्ण छंदमुक्त कविता, गीत, गीतिका, दोहे, सवैया, कुण्डली, आदि छंदों का सुरुचिपूर्ण पाठ कर इसे सार्थकता प्रदान की।

कार्यक्रम के आरंभ में संयोजक और पर्पल पेन की संस्थापक-अध्यक्ष वसुधा 'कनुप्रिया' ने संस्था द्वारा बीते वर्षों में हिन्दी भाषा के उन्नयन के लिए आयोजित गतिविधियों, प्रतियोगितों की जानकारी देते हुए बताया कि समूह हिन्दी में श्रेष्ठ कार्य करने वाले साहित्यकारों को सम्मानित कर रहा है और प्रतियोगिताएं के विजेताओं को उपहार भी भेज रहा है।

गोष्ठी की अध्यक्षता वरिष्ठ कवि श्री राजेंद्र निगम राज ने की तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में सुश्री डॉ. रश्मि अग्रवाल का सानिध्य रहा। अतिथिगण के द्वारा माँ वीणापाणि को पुष्पांजलि दे कर और ज्योतिमा रश्मि द्वारा गाई सरस्वती वंदना से इस कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

सर्व श्री/सुश्री रजनी रामदेव, इंदु राज निगम, भूपेंद्र कुमार, ओम प्रकाश शुक्ल, गुरचरण मेहता रजत, दिनेश आनंद, पूनम झा, पुष्पा शर्मा, बबली सिन्हा वान्या, दीपक वर्मा, गोल्डी गजब, ज्योतिमा रश्मि, राजेश शुक्ल, अमरपाल अमर, पुनीत पांचाल, गोपाल गुप्ता, सचिन परवाना, हिमांशु शुक्ला, रक्षा सिन्हा, मणिका वर्मा और पूजा श्रीवास्तव (गोष्ठी संचालक) ने एक से बढ़कर एक कविताएं पढ़कर 'शब्द स्पंदन' को एक अर्थपूर्ण और अविस्मरणीय कार्यक्रम बना दिया।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री राजेंद्र निगम राज ने कहा कि लम्बे अर्से बाद उन्होंने ऐसी बेहतरीन कवितायें सुनी। आपने युवा कवियों की प्रस्तुति की विशेषकर प्रसंशा हुए उन्हें काव्य जगत का उज्ज्वल भविष्य बताया। सुश्री डॉ. रश्मि अग्रवाल ने भी पर्पल पेन संस्था और वसुधा कनुप्रिया को उनकी निरंतर साहित्य सेवा के लिए साधुवाद दिया। दोनों विशिष्ट अथितियों ने अपनी सुमधुर आवाज में एक-एक गीत पढ़कर कार्यक्रम की गरिमा को बढ़ाया।

आसमान

आसमान, जिसे हर कोई
अपने नजरिए से देखता है।
किसी को नीला, किसी को सफेद,
तो किसी को काला दिखाई देता है।

कोई धरती से आसमान की
दूरी देखकर आश्चर्यचकित होता है,
तो कोई रात में टिमटिमाते तारों से
घिरे चाँद को देखकर प्रसन्न होता है।

लेकिन जो मैं देखती हूँ–
वह मेरे लिए बहुत खास है।
आसमान कोई रिक्त स्थान नहीं,
न ही ऊँचाइयों से भरा कोई
सुनसान विस्तार है,
बल्कि यह मन में बसे
विचारों का मंथन लगता है।

वह सूर्योदय से पहले
और सूर्यास्त के समय फैली
लालिमा,
एक सुकून भरा पल लगती है।

और रात में वे असंख्य तारे,
जो केवल टिमटिमाते नहीं,
बल्कि ऐसा लगता है जैसे वे
हमारा दर्द समझकर आँसू बहा रहे हों।

मानो वे हमारी खामोश नजरों को भी
बड़ी आसानी से पढ़ पा रहे हों,
और लुक-छिपकर हमें
इस ब्रह्मांड का सच बता रहे हों।

यह आसमाँ, ये वादियाँ
केवल शब्द नहीं हैं।
कभी अकेले इस खुले गगन के
नीचे बैठकर वक़्त बिताओ,
तब यही अम्बर हमारे मन के
अनकहे जज्बातों का आईना बन जाता है।

जो दर्द हम किसी को
बोलकर नहीं बता सकते,
वो ये अपने आप समझ जाते हैं।

और जो मैं महसूस करती हूँ,
वो रात का समय और शांत वातावरण,
मंद शीतल हवाएँ और
खुद से मोहब्बत वाला सुकून–
सब कुछ बड़ा पहचाना लगता है,
वो लम्हा हर दर्द से बेगाना लगता है।

टूटते तारों को देखकर वो खुशी,
एक पल में दुआ माँग लेने की
दुविधा में फँसी।
इन्हीं पलों में जो माँग सकीं, वो माँग लिया,
दिल में उम्मीद का दिया जलाकर
अपनी अधूरी मन्नत मान लिया।

बाद में वो मन्नत पूरी हुई या नहीं,
ये भी याद नहीं रहता है,
लेकिन तारों के संग बिताए गए
वक़्त में सुकून बहुत मिलता है।

बबीता वर्मा

आँखों की लालसा

पेट की भूख तो मिट जाती है
एक टुकड़े से,
लेकिन आँखों की तृष्णा मिटाने को
पीना पड़ जाता है विष।

जिह्वा तो टपकाती है लार
मीठे रस पर,
टिक जाती है तीखी मिर्ची
और खट्टे अचार पर।
लेकिन आँखें लपकना चाहती हैं
किसी की सुंदरता,
किसी का श्रृंगार।

कितनी भी पूरी हो जाए
दिल की तमन्ना,
मिल जाए चाहे
आसमान हिस्से में।

लेकिन होते हैं कुछ लोग ऐसे,
जिनकी खत्म नहीं होती
वासना आँखों में।

मन के विकार दिखते हैं आँखों में,
कुछ भी नहीं होता हाथों में,
फिर भी चला देते हैं
खंजर आँखों में।

जो दिखते नहीं चेहरे के दर्पण में,
फरेब का नकाब हटाते नहीं हैं।
लेकिन झाँकने से दिख जाते हैं
उनके गुनाह आँखों में।

जो बिछाता है जाल शब्दों का,
ठोकता है कीलें प्रेम की,
मारता है हथौड़ा विश्वास का।

उनकी आँखों में दिख जाता है
झूठ उनके मन का।

जीवन का अंत हो जाता है,
इंसान दफन हो जाता है।

लेकिन जाते-जाते भी
छोड़ जाता है
आँखों में एक तृष्णा।
– खुशी जैन

दोहा सप्तशती -१ : गागर में सागर

सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर। देखन में छोटे लगैं, घाव करैं गम्भीर।।

बच के रहना रे बाबा, बच के रहना रे! मैं खतरों का खिलाड़ी तो हूँ नहीं, तो मैंने भी सोचा भाग लेते हैं या रास्ता बदल लेते हैं। लेकिन, मैंने जब अपनी नजर घुमाई, तो देखा कि आगे 'जेन ओ' (ओल्ड) यानी कि मध्य युग के सतसईया लोग अपनी-अपनी पोथियों के साथ घेरा डाले हुए हैं और जोर-जोर से नारा लगा रहे हैं -

जो न पढ़ा सतसईया, कवि नहीं, वह है गवैया!

सभी के हाथों में बैनर की जगह है - तुलसी सतसई, बिहारी सतसई, रसनिधि सतसई, मतिराम सतसई, वृंद सतसई, भूपति सतसई, चंदन सतसई, विक्रम सतसई, राम सतसई!

कोई बात नहीं, ट्रेनिंग में यह भी तो बताते हैं कि कहीं जाने के पहले, भागने का रास्ता भी ढूँढ कर जाना चाहिए। सो, मैंने पीछे झाँका! रास्ता बंद! 'जेन एन' (न्यू) यानी कि आधुनिक काल के हरिऔध, वियोगी हरि जैसी हस्तियाँ! उनके हाथों में हरिऔध सतसई, वीर सतसई ....! वे भी जोर-जोर से नारा लगा रहे हैं -

जो न गढ़ा सतसईया, कवि नहीं, वह है भैया!

अब ऊपर तो जा नहीं सकता था क्योंकि पंख दिया नहीं ब्रह्मा ने! एक ही रास्ता बचा था - नाटा तो हूँ ही, झुककर-छुपकर उनके बड़े-बड़े बैनरों की ओट लेकर निकल जाता हूँ। शायद किस्मत साथ देने को तैयार नहीं थी। झुका तो भी फँसा - डॉ. विनय कुमार सिंघल ह्यनिश्छलह्ल जी ने पकड़ लिया। निश्छल - छल या कपट से रहित, लेकिन उनकी दीर्घ दृष्टि और पूवार्नुभव कृष्ण से कम नहीं! पकड़ा गया, सभा में लाया गया और दोष साबित हो गया। दिग्गज वकील महोदय की दलीलों से सजा मिली - मैं रणछोड़ दास उनकी पुस्तक 'दोहा सप्तशती -१' पर लिखूँ अपने विचार !

मैं श्रृंगार, माधुर्य, वीर रसों की वाटिका में न जाकर, न भटककर, अपनी बालकनी की छोटी-सी फुलवाड़ी में डॉ. विनय कुमार सिंघल जी के दोहों को कुछ इस तरह बिखड़ाया और सजाया कि मैं उन्हें आसानी से अपनी पसंद के अनुसार सजा सकूँ। इसलिए, मेरी बगिया में इनके दोहों की वह सीमित छटा ही छाई जिन्हें मैं पसंद करता हूँ।

एक वाक्य में कह सकते हैं - 'दोहा सप्तसती -१' 'गागर में सागर' है! और, इस सागर के गागर में हैं - जैविक संसाधन - मछलियाँ, सी-फूड, समुद्री शैवाल; खनिज और ऊर्जा संसाधन - पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस, पॉलीमेटैलिक नोड्यूल्स; बहुमूल्य और सजावटी वस्तुएं - मोती, शंख, सीपियां, मूंगा और सर्वोपरि जीवनदायिनी नमक! अब यह समझ में नहीं आता है कि किस मोड़ से शुरू करें। लेकिन, करना तो है, तभी तो बढ़ेंगे।

तो सबसे पहले जरुरी है, दोहाकार की छुपी-छुपाई मनोस्थिति को समझा जाए, न कि उनकी रचना में श्रृंगार, भक्ति, नीति, मिलन-बिछोह, उल्लास-विषाद, कल्पना शक्ति, अलंकार आदि का विश्लेषण!

सिंघल जी ने अपने 'उपोद्घात' में छुपी-छुपाई मनोस्थिति - सच का बयाँ किया है - दोहाकार भाई नरेश शांडिल्य से मार्गदर्शन, डॉ वीणा शंकर शर्मा 'चित्रलेखा' के साथ साझा दोहा संकलन की सम्भावना और विघ्न, और अंत में ७०९ (जबकि पुस्तक में कुल संख्या ७१२ दिखती है) का संकलन ह्यविनय सप्तशतीह्ल के रूप में हमारे समक्ष पेश करने का सफल प्रयास, जबकि पुस्तक का नाम जो छपा है, वह है - दोहा सप्तशती - १! शायद यह बाद में निर्णय बदला हो। मेरे ख्याल से विनय सप्तशती बेहतर होता क्योंकि जब तुलसी सतसई, बिहारी सतसई, रसनिधि सतसई, मतिराम सतसई, वृंद सतसई, भूपति सतसई, चंदन सतसई, विक्रम सतसई, राम सतसई कह सकते हैं, तो विनय सप्तशती से भी रचनाकार का नाम स्पष्ट हो जाता और वह भी प्रथम पृष्ठ पर ही!

दूसरी बात, पुस्तक पर 'भाग -१' क्यों लिखा है? लगा दिया फोन सिंघल जी को यह पूछने कि दूसरे भाग की प्रति नहीं मिली है। मिले तब, जब छपेगी। परन्तु, सिर्फ भाग - २ नहीं, संभवतः भाग - ३ और भाग - ४ तक जाए - उन्होंने छूटते ही बताया। अयें, इसका मतलब यह हुआ कि सतसई-संसार के एकमात्र बहु-सतसईकार! मुबारक हो डॉ विनय कुमार सिंघल जी!

शुरूआत ही हुई है एक तीर से कई शिकार की - भक्ति, अध्यात्म, मिलान, बिछोह, अनुप्रास का संयोजन है एक ही दोहे में -

मोहे मोहन मोद में, मोरी मत मदराय,
मारी-मारी मैं फिरूँ, मनमोहन मुस्काय! (दोहा १)

इनके दोहों को शुरू से अंत तक एक साथ पढ़ना और याद रखना असंभव है। बिखरे हुए मोतियों की छटा कम नहीं होती, फिर भी मोतियों को छाँटकर एक माला पिरोना भी कम प्रयासकर नहीं होता है। इन मोतियों से छोटी-छोटी कुछ मालायें बनाने का प्रयास किया है, जो नीचे देखी जा सकती हैं आपके द्वारा, आपकी पसंद के अनुसार!

इनके दोहों में कितने हैं भक्ति के, गिनती मुश्किल है यानी कि इन्होंने भी 'जेन ओ' का पथ अपनाया है और स्वीकारा भी है-

कहता चल तू दोहरे, नित न्यारे अभिराम,
प्रभु जानें तेरी व्यथा, भली करें प्रभु राम! (दोहा -३७)

और क्यों लिखें और पढ़ें दोहे, उन्होंने समझाया भी है। उन्हीं के शब्दों में -

दोहों की दुनिया बड़ी, होती रोचक मीत,
करती सारे ताप का, शमन रोपती शीत! (दोहा -७०४)

इसी तरह नीति पर भी दोहों की संख्या अनगिनत है -

प्राणी हत्या पाप है, बनो निरामिष तात,
तू बचने न पायेगा, तड़पेगा तव गात! (दोहा - ३६)

ऐसा नहीं कि इन्होंने सिर्फ पुराने लीक पर ही दोहे गढ़े हैं, वरन् इनके दोहों की भीड़ में घर, परिवार, सांसारिक जुड़ाव के भी उदहारण मिलते हैं -

महके महुआ लाडला, जुगबु से गलहार,
फागुन की मस्ती भरे, पानी में अंगार! (दोहा -३९)

घर-परिवार से आगे बढ़कर उन्होंने जल की महत्ता, सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक विसंगतियों, हास्य, व्यक्ति विशेष, हिंदी, योग, क्रोध, माँ, नेता, बच्चों, प्रेम और प्रिया, धन, न्यायपालिका, विदेश आदि जीवन के अनगिनत क्षेत्रों पर दोहामय लेखनी चलायी है।

केंद्र और राज्य सरकारों की संस्थाओं की ही नहीं, सारे विश्व में आज जल संरक्षण की माँग है जिसके बारे में न कबीर ने 'क' लिखा और न बिहारी लाल ने 'ब'; लेकिन अगर 'अब' वे होते तो जरूर लिखते! वो, कमी पूरी कर दी है विनय सिंघल जी ने -

कल की कल, जल में छिपी, जल जीवन आधार,
बूँद बूँद पीयूष है, जल का कर सत्कार! (दोहा - ३८)

सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक विसंगतियों पर 'जेन ओ' (ओल्ड) ने लिखा और 'जेन एन' (न्यू) ने भी। यानी कि यह एक लेखन-धर्म है जो युग-युगांतर से चला आ रहा है और डॉ. सिंघल जी धर्म विमुख नहीं हुए। तो, बानगी देखें सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक सामाजिक विसंगतियों की -

मैं तो समझा था प्रिये, जीवन भर का साथ,
मुझे छोड़ तुम जा बसे, परदेसी के साथ! (दोहा - १५४)

चोर, चोरनी ला रहे, नाम बदल कर चोर,
कैसे आएगी भला, घर में पावन भोर! (दोहा - १६)

कर्मकांड में डूब कर, मत कर तू पाखंड,
दुखियों के आँसू मिटा, उठा नेक को दंड! (दोहा - १४२)

फिर, हास्य तो ऐसा है कि आप कबीर की पंक्तियों को याद कर सकते हैं, कांकड़ पाथर छोड़कर मस्जिद लियो बनाये, ता चढ़े मुल्ला बांग दे, क्या बहिरा हुआ खुदाए और पाथर पूजे हरि मिलै, तो मैं पूजूँ पहाड़! इन सबसे बढ़कर ह्यजेन जीह्ल पर हास्य देखें जिनपर आप हँसे बिना रह ही नहीं सकते -

कुत्ते जैसा हो गया, तू भी मेरे यार,
शौच कराता फिर रहा, तू कुत्ते को यार! (दोहा - १००)

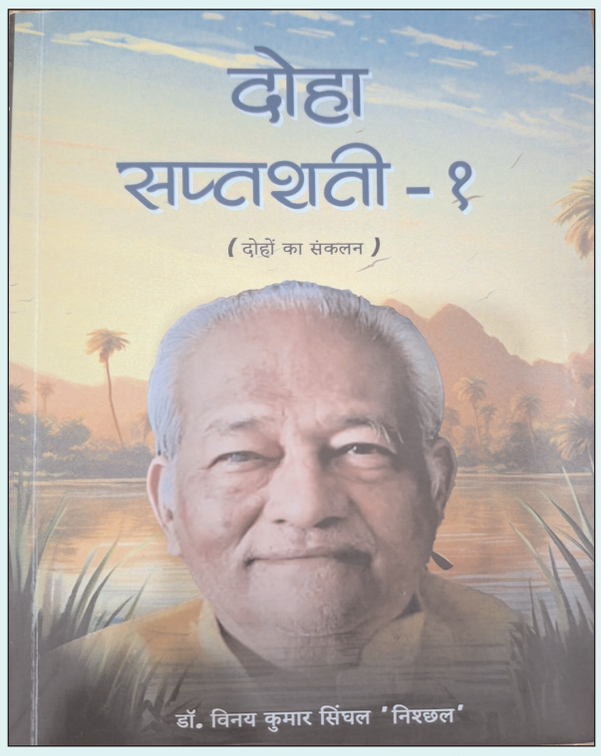

डॉ सिंघल जी आधुनिक काल के हस्ताक्षर हैं, तो इनकी कलम ने आज के नए पर्व त्योहारों पर लेखनी चलाई और वो भी सच को बयाँ करती हुई। हिंदी पर कुछ ऐसे हैं तीखे तीर -

हिंदी दिवस मना रहे, कुछ कवियों की ठाट,
सरकारी पैसा मिले, होती बंदरबाँट! (दोहा - १४६)

हिंदी हिंदी हो रहा, चहुँदिक हिंदी गगन,
फिर सो जायेंगे सभी, ताज हिंदी का मान! (दोहा - १४७)

आधुनिक उत्सवों में एक और नाम है - 'योग दिवस!' ११ दिसंबर २०१४ में संयुक्त राष्ट्र संगठन-द्वारा २१ जून को ह्ययोग दिवस' के रूप में अपनाये जाने के बाद, यह हर वर्ष पर्व-त्योहारों की तरह सारी दुनिया में मनाया जाता है। आयुष मंत्रालय और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय-द्वारा योग और स्वस्थ जीवन-शैली को बढ़ावा देने के लिए कई लोकप्रिय नारे दिए गए हैं - योग करें, निरोग रहें! तो, ऐसे में योगी मन मचल उठा। देखें बानगी जिनमें योग के साथ-साथ भक्ति भी शामिल है-

भोग विनाशक होत है, रोग भोग का प्राण,
योग अगर अपनाये लो, रोग होय निष्प्राण! (दोहा - ५)

भोग से अपना मन हटा, योगी बन के माँग,
माँ ही फिर देगी तुझे, रोगमुक्ति का राग! (दोहा - ३२२)

माँ की महत्ता संस्कृत के इस श्लोक में देखी जा सकती है -

नास्ति मातृसमा छाया नास्ति मातृसमा गतिः।
नास्ति मातृसमं त्राणं नास्ति मातृसमा प्रपा॥

और, इसी महत्ता को दोहे में कहा है डॉ. सिंघल जी ने -

मूरख माँ पर कर सदा, आँख मूँद विश्वास,
सारे दुःख वो मेट कर, देती सुःख की साँस! (दोहा - ३९२)

तूने जाना ही नहीं, माँ का नेह विधान,
न्याय उसी के हाथ में, यह भी तू ले जान! (दोहा - ३९३)

बच्चों के लिए भी कई शिक्षाप्रद दोहे हैं जिनमें से एक दोहा जो हर पीढ़ी के लिए महत्वपूर्ण है और खास तौर पर आज की जनरेशन के लिए, उद्धरणीय है -

तू बच्चों के दोष पर, पर्दा कभी न डाल,
बच्चे हैं कच्चे घड़े, चाहे जैसा ढाल ! (दोहा -४६८)

प्रेम और प्रिया परिवार का आधार है, तो इन्हें कैसे छोड़ सकते थे हमारे दोहाकार डॉ. सिंघल जी। कई दोहे पठनीय हैं - ५३३, ५३४, ५३५, ५३६, ६१६ ! एक ओर प्रेम का उद्गार है -

मेरी आहों से प्रिये, होता उल्कापात,
मैं पीड़ित चिरकाल से, करो न मुझ पर घात! (दोहा - ६१६)

चलो प्रिये छत पर चलें, निकला छत पर चाँद,
चलो सुधा पी लें अभी, सीमाओं को लाँघ!! (दोहा - ५३६)

तो दूसरी ओर आज की नवयौवनाओं की आँख मिचौनी के खेल का भी जिक्र है -

मैं तो समझा था प्रिये, जीवन भर का साथ,
मुझे छोड़ तुम जा बसे, परदेसी के साथ!

परिवार के बाद आता है दोस्तों का साथ! दोस्तों को प्यार से गाली देकर ही बुलाते हैं न हमसब ! और आज जब दोस्त दोस्त न रहा, तो ऐसे में दोस्त पर गुस्सा नाजायज नहीं कह सकते। शायद, निश्छल सिंघल जी से किसी दोस्त ने दुश्मनी ठानी होगी, तभी तो कवि को क्रोध करने का पूरा अधिकार है और व्यक्त करने का भी। हाँ, उनका तरीका अनोखा हो सकता है -

गिन गिन कर मैं थक गया, तेरी गाली यार,
अगली गाली पर करूँ, मैं तेरा संहार! (दोहा - ३३२)

परिवार, मित्रों और समाज में बने रहने के लिए क्या सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, हमारे महर्षियों ने बहुत पहले ही कह रखा है - वित्तम् सर्वं! इन्होंने भी वित्त यानी कि धन की चर्चा कई दोहों में की है जिनमें द्रस्टव्य हैं - ५३२, ५८०, ङ्क. -

धन ना जाता साथ में, सच्ची है यह बात,
लेकिन प्यारे धन बिना, बिगड़े बनती बात ! (दोहा - ५३२)

अगर कविवर की पुस्तक दोहा सप्तशती -१ में संकलित दोहों को सिर्फ अपने पूर्ववर्ती दोहाकारों के दोहों पर निर्णय करें, तो यह इनकी पुस्तक के साथ अन्याय होगा क्योंकि हिंदी की कहावत/पंक्ति है -

लीक-लीक गाड़ी चलै, लीकहि चले कपूत।
लीक छाड़ि तीनों चलें, शायर सिंह सपूत।।

तो इन सपूत कविवर सिंघल जी के दोहों की विशेषता का निर्णय उनकी आज की घटनाओं पर पकड़, उन्हें व्यक्त करने और कुछ अनूठा कर/लिख जाने के मापदंड पर भी देखनी होगी। लीक छोड़कर चल तो पड़े, लेकिन क्या-क्या मिला लीक से हटकर और क्या वह ताज्जुब करने लायक है? हाँ, है। सुनिए एक-एक कर।

आपने कोई दोहा सुना-पढ़ा है नेता के ऊपर? नहीं न ! तो, पढ़िए और सुनिये-

साधू बनकर एक दिन, देवें गीता ज्ञान,
पाँच वर्ष जी भर करें, जनता का अपमान ! (दोहा - ६२१)

नेता नेता एक हैं, लूट रहे सब माल,
दुष्ट बने सिरमौर हैं, जनता है बेहाल ! (दोहा - ४३३)

नेता से राजनीतिक पार्टियां बनीं और इन्होंने दोहा गढ़ा -

कांग्रेस रचित जिंजरी , सबने देखा खेल,
देश लूट कर खा गई, घोटालों में पेल ! (दोहा - ६१८)

फिर विभिन्न पार्टियों के नेता-विशेष पर भी लिख डाला। कुछ पेश हैं -

भारत के इतिहास के, शिखर महान पटेल,
जो कलंक को पूजते, सारे विष की बेल ! (दोहा - १७५)

मोदी के गुणगान पर, क्यों है हाहाकार,
सब हिन्दू के बीज हैं, हम भी वे भी यार ! (दोहा - ६१५)

लाल बहादुर ने किया, नायक बनकर काम,
सबके दिल में बस गये, पूजता उनका नाम ! (दोहा - ४३४)

व्यक्ति विशेष पर लिखे दोहों को पढ़ते-पढ़ते एक दोहा मिला जिसे समझ सकें, तो समझें या फिर कविवर से पूछें। पहले सुनें दोहा -

तुम्हें मिली बिहार की, भेंटें नाना रूप,
प्रीत, सुनीता, कामिनी, लावण्या सी धूप! (दोहा - १७८)

इस सम्बन्ध में मैं बता दूँ कि एक बार कविवर ने बताया था कि उन्हें बिहारियों से बहुत संपर्क रहा है और बहुत दिनों से। उन्होंने कुछ नाम भी बताये थे, लेकिन अब मुझे स्मरण नहीं है। परन्तु, ऊपर वाली पहेली का जवाब मुझे मालूम है। सुनिए - यह दोहा उन्होंने श्री विनोद श्रीवास्तव, एडवोकेट के लिए लिखा था। प्रीत, सुनीता, कामिनी तीनों वकील हैं बिहार से और लावण्या जी श्री विनोद श्रीवास्तव की पत्नी! लावण्या जी सेवानिवृत्त अध्यापिका हैं! प्रीत, सुनीता, कामिनी बिहार की विभूतियाँ हैं जिन्होंने कवि के निर्देशन में वकालत के क्षेत्र में काम शुरू किया और आज स्थापित हैं इस क्षेत्र में!

हम सब अखबार जरूर पढ़ते हैं। अगर आप का जवाब 'न' है, तो आप टी. वी. जरूर देखते होंगे। अगर इसका जवाब भी 'न' है, तो आप मल्टीमीडिया के दीवाने-परवाने हैं ! हैं न ! हर क्षण ऊँगली चलती रहती है स्क्रीन स्क्रॉल करने के लिए! फिर आप इस बात पर भी 'न' नहीं कह पायेंगे कि आपने नहीं देखी- पढ़ी है - आजकल के अखबारों में एक अनोखी खबर आने लगी है - न्यायपालिका पर ऊँगली उठने लगी है। और, डॉक्टर विनय कुमार सिंघल निश्छल जी जो पेशे से प्रसिद्ध काबिल विधिक व्यवसायी अधिवक्ता रहे हैं, नजर बंद नहीं कर सकते हैं। हाँ, उन्होंने हालात को कलमबंद कर लिया है अपने दोहों ५४५, ५४६ में -

अकूत धन अब मिल रहा, न्यायमूर्ति के गेह,
कलियुग भी लज्जित हुआ, लख निर्लज्ज सदेह ! (दोहा - ५४६)

पता नहीं कविवर विदेश गए या नहीं, परन्तु शायद इन्होंने विदेशों के बारे में अच्छी जानकारी हासिल कर दोहों में हमें समझा रहे हैं -

इजराइल की फौज भी, सजग रहे हर याम,
भरे पड़े हैं वीर भट्ट, घर-घर उसका धाम ! (दोहा - ६२०)

गीतकारों ने शोक गीत लिखा है। सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने अपनी पुत्री पर एक लंबी कविता 'सरोज-स्मृति' लिखी है जो हिंदी साहित्य का श्रेष्ठतम और अत्यंत मर्मस्पर्शी शोक-गीत है-

ऊनविंश पर जो प्रथम चरण
तेरा वह जीवन-सिंधु-तरण;
तनय, ली कर दृक्-पात तरुण
जनक से जन्म की विदा अरुण!

आश्चर्य तो तब हुआ जब इनके दोहों में व्यक्तिगत शोक सन्देश नजर आ गए जो पूर्ववर्ती दोहों में नहीं मिलते। अनूठा प्रयोग है -

विजय गुप्त जी को समर्पितः
जो आया वह कर गया, अपना अपना काम,
शेष यही है कामना, पाए प्रभु का धाम! (दोहा - १७२)

तो ऐसा न समझ लें कि सिंघल जी ने सच की खोज नहीं की है। पूर्णतः पॉजिटिव थिंकर हैं। रावण में भी अच्छाइयाँ हैं। बस आप ढूँढ सकें, तो ढूँढ़ लें -

आओ हम फिर से लिखें, सच की गाथा आज,
रावण की अच्छाइयाँ, बने मनुज का ताज ! (दोहा - ४३०)

अंतिम दोहा ७१२ तो पूर्ण आशावादी है! हैप्पी इंडिंग!

दीवाली भी आ गयी, लेकर एक उजास,
जाना उस घर, तम जहाँ, करता हो अधिवास ! (दोहा -७१२)

सवाल अगर जेहन से निकले नहीं, तो जवाब कहाँ से आयेगा? तो, आज जेहन से उछलकर सवाल बाहर आ गया जब डॉक्टर साहेब का फोन आया - दोहों को आपने दो की जगह चार पंक्तियों में क्यों कर दिया है? जवाब भी सटीक था और पाठकों की सुविधा के लिए - पाठक को पता चल सके कि कहाँ पर किस विषय वास्तु पर जोड़ देना है। यानी कि सत्य की सर्जरी करने की जरुरत न पड़े!

इतनी मेहनत से ७१२ दोहे पढ़े हैं, तो मेरा ज्ञान भी कुछ बढ़ गया है! खोजी प्रवृत्ति जागृत हो गयी! कविवर की कृपा है! कविवर की कृपादृष्टि से मैं कुछ अनछुये और छिपे पहलूओं पर लिख पा रहा हूँ। अधजल गगरी छलकत जाये-जैसी मेरी स्थिति हो गयी है। मेरी गगरी भी छलक पड़ी है, तो कुछ अपने मन की लिख डालता हूँ।

पुस्तक पढ़ने के दौरान मुझे लगा कि कुछ दोहे संभवतः रिपीट हो गए हैं जिनपर आगे आनेवाली पुस्तकों में ध्यान देकर ठीक करना पड़ेगा। दूसरी बात, विभिन्न विषयों पर लिखे दोहे हैं, तो मेरी दृष्टि में यह अच्छा होता कि इन्हें कैटेगराइज कर प्रस्तुत किया जाता ताकि इनपर शोध के वक़्त शोधकर्ता को सुविधा होती।

उम्मीद है कि न भूतो न भविष्यति वाली चार भागों में प्रकाशन होने वाले लगभग तीन हजार दोहे वगीर्कृत (ॅ३ॅङ्म१९ीा) रूप में हमारे समक्ष आयेंगे और ट्रेडिशनल दोहों के साथ-साथ न्यायपालिका, शोक सन्देश वाले दोहों-जैसे जीवन के कई अन्य अनछुए पहलूओं पर भी दोहाकार के दोहे हमें पढ़ने को मिलेंगे। संभवतः कुछ और नए क्षेत्र भी होंगे - जेन जी, जेन अल्फा (ऋील्ली१ॅ३ङ्मल्ल अह्लस्रँ), जेन बीटा (ऋील्ली१ॅ३ङ्मल्ल ङ्घी३), एस आई आर २०२६ (रस्र्ीूंह्ल कल्ल३ील्ल२५ी फी५२ङ्मल्ल 2026), वैश्विक संघर्ष और भू-राजनीति, खराब मौसम और बाढ़, प्रकृति से छेड़छाड़ और उसका परिणाम, सड़क दुर्घटनायें और मौत, इमारत जलने एवं गिरने की दुखद घटनायें इत्यादि!

कविवर डॉ विनय कुमार सिंघल निश्छल जी से बस यही कहना है उनके तीन हजार दोहों के लिए - हम इंतजार करेंगे कयामत का, खुदा करे कि कयामत हो और इनके दोहे आयें! अल्लामा इकबाल की तरह होगा हम सब दोहा प्रेमियों का इंतजार -

माना कि तेरी दीद के काबिल नहीं हूँ मैं,
तू मेरा शौक देख मेरा इंतजार देख !

शंभु अमिताभ
नई दिल्ली
८ सितम्बर २०२६
रात्रि २३:२७

तुम्हें पता भी नहीं

कभी सोचना, तुम्हारे होने का असर
कितना दूर तलक जाता होगा,
तुम तो लौट आते हो अपने घर,
मगर कोई तुम्हें लेकर आगे बढ़ता होगा।

तुम्हारे लिए तो शायद कुछ शब्द थे,
जो यूँ ही होंठों से निकल गए,
किसी के भीतर वही शब्द जाने
कितने टूटे हुए हौसलों को संभाल गए।

तुमने तो बस किसी की आँखों में
देखकर इतना कहा होगा हारना मत,
तुम्हें क्या मालूम, उसी एक वाक्य ने
किसी को खुद से हारने दिया ही नहीं होगा।

कभी तुम्हारी एक मुस्कान किसी
अनजान चेहरे की वजह बनी होगी,
कभी तुम्हारी छोटी-सी हिम्मत किसी
और की बड़ी वजह बनी होगी।

कितने ही लोग होंगे, जिनका नाम
तुम्हें अब याद भी नहीं आता,
मगर तुम्हारी कही कोई बात आज
भी उनके भीतर चुपचाप मुस्कुराती होगी।

अजीब है न ,हम असर छोड़कर भी
अपने असर से अनजान रहते हैं,
किसी की राह बदलकर भी अपनी
ही राह पर बेखबर चलते रहते हैं।

हम सोचते हैं, ज़िंदगी ने हमें क्या
दिया और हमसे क्या ले लिया,
किसने हमें अपना बनाया, किसने
हमें अकेला कर दिया;
मगर कभी ये हिसाब नहीं करते कि
हमारी मौजूदगी ने क्या कर दिया,
किसी के बुझते विश्वास में चुपके से
उम्मीद का दीपक धर दिया।

शायद किसी ने तुम्हें देखकर अपने
सपनों को नाम दिया होगा,
शायद किसी ने तुम्हारी वजह से खुद
को फिर से थाम लिया होगा।

शायद तुम्हें याद भी नहीं कि तुमने
कब किसी का डर कम किया था,
कब किसी की चुप्पी में बिना पूछे
थोड़ा-सा अपना मन रख दिया था।

तुम्हें लगता रहा होगा कि तुम तो बस
अपने हिस्से का सफर कर रहे हो,
पर क्या पता, तुम्हारे पीछे कितने
कदम तुम्हारी वजह से चल रहे हों।

किसी की कहानी में तुम शायद एक
छोटा-सा किरदार हो,
मगर हो सकता है उसी कहानी के
बदल जाने का पहला आधार हो।

हर मुलाकात मंज़िल नहीं होती, हर
रिश्ता उम्रभर का नाम नहीं होता,
कुछ लोग बस कुछ पल के लिए
आते हैं, मगर उनका असर कभी
कम नहीं होता।

और शायद इंसान की सबसे बड़ी
खूबसूरती भी यही है
वो जाने बिना भी किसी की दुनिया
में उजाला कर जाता है,
वो खुद उसी अँधेरे से लड़ता रहता
है जिसमें दूसरा भी घिरा होता है,
और अनजाने में किसी और के लिए
सुबह बन जाता है।

इसलिए जब कभी लगे कि तुम्हारा
होना किसी के लिए मायने नहीं
रखता,
जब अपने ही जीवन में तुम्हें अपना
कोई निशान दिखाई नहीं देता,
तो जरा पीछे मुड़कर देखना
हो सकता है तुम्हारे छोड़े हुए कदमों
के निशान पर
कोई आज भी अपने कदम रखकर
चल रहा हो।

क्योंकि हम सिर्फ़ अपनी ज़िंदगी नहीं
जीते,
हमसे होकर जाने कितनी ज़िंदगियाँ
थोड़ी-थोड़ी बदलती हैं;
हम सिर्फ़ लोगों से मिलते नहीं,
कभी उनकी सोच, उनका साहस,
उनकी उम्मीद बनकर निकलते हैं।

और सबसे खूबसूरत बात ये नहीं
कि कोई तुम्हें याद रखे,
सबसे खूबसूरत बात ये है कि तुम्हें
याद किए बिना भी
तुम्हारी कही कोई बात उसके भीतर
ज़िंदा रहे।

इसलिए मत पूछना हमेशा
मैंने अपनी ज़िंदगी में हासिल क्या
किया?
कभी ये भी पूछना
मेरे होने से किसी और की ज़िंदगी में
क्या बदल गया?

शायद तुम्हें कोई जवाब न मिले,
शायद कोई तुम्हारा नाम लेकर कभी
न कहे कि तुम वजह थे,
मगर यकीन रखना

कहीं न कहीं, किसी की कहानी में
तुम वो पन्ना हो,
जिसे पढ़कर उसकी कहानी
पहले जैसी नहीं रही।

और तुम्हेंङ्क
तुम्हें पता भी नहीं।

प्रेरणा सिंह

अखिल भारतीय साहित्य परिषद् गुरुग्राम इकाई द्वारा मलेबू टाउन में महिला संगोष्ठी का आयोजन किया गया

अखिल भारतीय साहित्य परिषद् गुरुग्राम इकाई द्वारा मलेबू टाउन में महिला संगोष्ठी का आयोजन किया गया । शहर की समस्त सम्भ्रांत महिलाओं द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा पर परिचर्चा की गई । परिषद् की अध्यक्ष श्रीमती विधु कालरा ने रीति रिवाजों और धार्मिक अनुष्ठानों की वैज्ञानिकता और प्रासंगिकता पर विस्तार पूर्वक चर्चा की । संगोष्ठी में ह्शब्द-यात्राह्की अध्यक्ष श्रीमती शारदा मित्तल ने अपने विचारों के माध्यम से लोक व्यवहारिकता पर विचार विमर्श किया । ह्अहंब्रह्मास्मि ह्की अध्यक्षा श्रीमती दीपशिखा श्रीवास्तव ने खान-पान की भारतीय परम्परा को अपने विचारों के माध्यम से व्यक्त किया । गुरुग्राम की चर्चित कवयित्री श्रीमती वीणा अग्रवाल ने कविताओं के द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा को उजागर किया । हिन्दी साहित्य की सुधी लेखिका श्रीमती शकुन्तला मित्तल ने गंभीर चिंतन परक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया । शब्द-यात्रा की महासचिव श्रीमती प्रीति मिश्रा ने भारतीय ज्ञान परंपरा एवं धार्मिकता पर विस्तार से प्रकाश डाला । गोष्ठी को विशेष रूप से संबोधित किया श्रीमती सविता स्याल,डॉ.अस्मिता तिवारी,आभा कुलश्रेष्ठ,मोनिका सोलंकी तथा उपस्थित रहे श्रीमती शशिप्रभा ,शशि एवं विशाखा ।

रामजस फाउंडेशन कवि सम्मेलन: डॉ. प्रवीण शुक्ल का स्नेह, नई जिम्मेदारी और काव्यमयी शाम

रामजस फाउंडेशन द्वारा आयोजित कवि सम्मेलन एक नया अनुभव देने वाला रहा सुप्रसिद्ध कवि एवं अद्भुत संचालक बड़े भैया डॉ प्रवीण शुक्ल जी के संयोजन में आयोजित यह कवि सम्मेलन पिछले कई दशकों से यूँ ही सफलता के कीर्तिमान स्थापित कर रहा है

इस बार मेरे लिए खास यह इसलिए भी रहा कि बड़े भैया डॉ प्रवीण शुक्ल जी के स्नेहिल आदेश पर इस ऐतिहासिक कवि सम्मेलन के संचालन करने का अवसर प्राप्त हुआ

सम्मान, अतिथि उद्बोधन और डॉ प्रवीण शुक्ल जी के उद्बोधन एवं कविता के बाद प्रथम सत्र में रामजस विद्यालय के बच्चे 3 समूहों में कविता पाठ किए जिनके कविताओं के लिए निर्णायक मंडल में शामिल रहा फिर दूसरे सत्र में एक बढ़िया कवि सम्मेलन जहाँ वरिष्ठ कवि डॉ सारस्वत मोहन मनीषी जी, भैया मनवीर मधुर जी, भाई सुंदर कटारिया जी और ऊषा श्रीवास्तव जी ने काव्यपाठ करके कार्यक्रम को ऊँचाइयाँ दी

मुझे इस कार्यक्रम का हिस्सा बनाने के लिए प्रवीण भैया का बहुत बहुत आभार और सप्रेम आमंत्रण एवं स्नेह, सम्मान के लिए वसुंधरा मैम का धन्यवाद

ऐतिहासिक, धार्मिक व साहित्यिक चेतना का संगम: ओरछा, चंदेरी, खजुराहो और झाँसी की चार दिवसीय यात्रा

बरखा की मोहक फुहार और मीठी यादों के साथ पूरा हुआ ओरछा,चंदेरी,खजुराहो और झाँसी का चार दिवसीय ऐतिहासिक और साहित्यिक सफर। खजुराहो के प्रसिद्ध कलात्मक मंदिर, केन नदी, राम राजा सरकार, जहांगीर महल,रिहनी फाल, बेतवा-जामुनी नदी संगम,चंदेरी का ताना बाना, हवा महल,जौहर स्मारक,बैजू बावरा की समाधि, जागेश्वरी माता मंदिर, लक्ष्मण मन्दिर,ओरछा लड़ाकों की प्रसिद्ध छतरियाँ समेत अनेक ऐतिहासिक, धार्मिक स्थलों का भ्रमण तो किया ही, साथ ही ओरछा की सृजन कॉटेज में आयोजित कई कवि गोष्ठियों में काव्य,संस्मरण और साहित्यिक चचाएँ भी हुईं ।

अंतिम पड़ाव पर झाँसी में रविवार, छह सितम्बर को कवि-शायरों की एक खूबसूरत महफि ल सजाई डॉ विक्रम अग्रवाल और कथाकार डॉ निधि अग्रवाल ने, जिसका सरस संचालन दिल्ली के कवि अनिल मीत ने किया । दिल्ली एनसीआर से मनोज अबोध, नरेश शांडिल्य, विजय स्वर्णकार, अरविंद असर, माधुरी स्वर्णकार, प्रमोद शर्मा असर और अनिल मीत ने इस काव्य गोष्ठी में भाग लिया । इस अवसर पर झाँसी के प्रमुख कवियों में पन्ना लाल असर, अर्जुन सिंह चाँद, पंकज अभिराज,डॉ सुमन मिश्रा,कुन्ती हरिराम, निहाल चंद शिवहरे,डॉ ए के सांवल,साकेत सुमन चतुर्वेदी,रचना तिवारी,मेघा निगम,डॉ सविता दुबे के अलावा बड़ी संख्या में स्थानीय प्रबुद्ध श्रोता और दिल्ली से श्रीमती श्वेता सोनकर और श्रीमती रेखा शर्मा भी उपस्थित रहे । इस अवसर पर दिल्ली की साहित्यिक संस्था वयम् की ओर से डॉ विक्रम अग्रवाल और डॉ निधि अग्रवाल का सारस्वत सम्मान भी किया गया ।

युवा पाठक एवं शोधार्थी आयाम(दिल्ली प्रांत), गोष्ठी
इंद्रप्रस्थ साहित्य भारती दिल्ली संबद्ध
अखिल भारतीय साहित्य परिषद
विषय : विभाजन विभीषिका : साहित्य से सिनेमा तक
8 अगस्त 2026
मुख्य वक्ता: डॉ विनोद बब्बर , अध्यक्ष इंद्रप्रस्थ साहित्य भारती , दिल्ली , अखिल भारतीय साहित्य परिषद
सान्निध्य : आदरणीय मनोज कुमार जी, संगठन मंत्री , अखिल भारतीय साहित्य परिषद

भारत 2047 : विकास की गंगा : शिक्षा, तकनीक और युवा पीढ़ी बनेगी विकसित भारत की आधारशिला

नई दिल्ली। भारत आज परिवर्तन के ऐसे दौर से गुजर रहा है, जहाँ विकास केवल आर्थिक प्रगति का नाम नहीं, बल्कि शिक्षा, तकनीक, रोजगार, सामाजिक समानता और युवा शक्ति के समन्वित विकास का प्रतीक बन चुका है। वर्ष 2047 में स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे होने तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का संकल्प तभी साकार होगा, जब देश की शिक्षा व्यवस्था मजबूत हो, तकनीकी क्षमता विश्वस्तरीय हो और युवा पीढ़ी को अवसरों के साथ सही दिशा भी मिले।

शिक्षा होगी विकास की पहली सीढ़ी

किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसके शिक्षित नागरिक होते हैं। भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने के लिए ऐसी शिक्षा व्यवस्था आवश्यक है, जो केवल डिग्री प्रदान न करे, बल्कि ज्ञान, कौशल, अनुसंधान, रचनात्मकता और चरित्र निर्माण पर भी जोर दे। गांवों से लेकर महानगरों तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की समान पहुंच सुनिश्चित करनी होगी। स्कूल और उच्च शिक्षा संस्थानों में डिजिटल शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और उद्यमिता को बढ़ावा देना समय की मांग है। शिक्षा को रोजगार से जोड़ने के साथ-साथ विद्यार्थियों में समस्या समाधान, नेतृत्व और नवाचार की क्षमता विकसित करनी होगी।

तकनीक बनेगी प्रगति का इंजन

21वीं सदी में तकनीक विकास की सबसे बड़ी शक्ति बन चुकी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स, डिजिटल सेवाएं, अंतरिक्ष विज्ञान, जैव-प्रौद्योगिकी और हरित तकनीक जैसे क्षेत्र भारत के भविष्य को नई दिशा दे सकते हैं।

भारत को केवल तकनीक का उपभोक्ता नहीं, बल्कि विश्वस्तरीय तकनीक का निमार्ता बनना होगा। डिजिटल इंडिया की भावना को गांव-गांव तक पहुंचाकर प्रत्येक नागरिक को डिजिटल सुविधाओं, इंटरनेट और आधुनिक ज्ञान से जोड़ना आवश्यक है। तकनीक का उपयोग शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग और प्रशासन को अधिक पारदर्शी एवं प्रभावी बनाने में किया जा सकता है।

युवा शक्ति है भारत की सबसे बड़ी पूंजी

भारत की युवा पीढ़ी देश के भविष्य की सबसे बड़ी ताकत है। युवाओं में ऊर्जा, प्रतिभा, कल्पनाशक्ति और जोखिम उठाने की क्षमता है। यदि उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, आधुनिक कौशल, रोजगार और उद्यमिता के पर्याप्त अवसर मिलें, तो वे भारत को विश्व की अग्रणी अर्थव्यवस्थाओं में स्थापित कर सकते हैं।

युवाओं को नौकरी खोजने वाला ही नहीं, बल्कि रोजगार देने वाला बनाने की दिशा में स्टार्टअप, स्वरोजगार और नवाचार को बढ़ावा देना होगा। साथ ही युवाओं में राष्ट्रनिर्माण, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक जिम्मेदारी और नैतिक मूल्यों की भावना मजबूत करनी होगी।

2047 का भारत कैसा हो ?

2047 का विकसित भारत ऐसा हो, जहाँ हर बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले, हर युवा को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिले, तकनीक आम नागरिक के जीवन को सरल बनाए और विकास का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे। शिक्षा ज्ञान की ज्योति बने, तकनीक विकास की गंगा और युवा शक्ति राष्ट्र की धारा।

भारत की विकास यात्रा में सरकार, शिक्षण संस्थान, उद्योग, समाज और नागरिक–सभी की भागीदारी आवश्यक है। यदि शिक्षा, तकनीक और युवा शक्ति को एक साथ आगे बढ़ाया गया, तो 2047 का भारत केवल विकसित राष्ट्र नहीं, बल्कि ज्ञान, नवाचार, मानवता और समृद्धि का विश्वगुरु बनने की दिशा में मजबूत कदम बढ़ा सकता है।

भारत 2047 का सपना केवल सपना नहीं–यह आज के संकल्प, शिक्षा, तकनीक और युवा शक्ति से निर्मित होने वाला उज्ज्वल भविष्य है।

सी ए. डॉ. शंकर अंदानी
अहिल्या नगर, महाराष्ट्र

डिजिटल साहित्य २४ पत्रिका-डिजिटल संस्करण-मीडिया पंचायत न्यूज पोर्टल दिल्ली कार्यालय २४ आदर्श गली, पालमगाँव नई दिल्ली, प्रथम तल ११००४५

नोट- उपर्युक्त ई पेपर को अवैध रूप से छपवाना कानूनन अपराध है।